प्रकाशन तिथि : 01 अप्रेल, 2020
प्रेषण तिथि : 04 अप्रेल, 2020

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

# पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 24 | अंक 02 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रतिः रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

## प्रकृति के प्रकोप के बीच शक्ति पर्व

पूरा संसार इस समय प्रकृति के प्रकोप से पीड़ित है। अपनी बुद्धि के बल पर प्रकृति को नियंत्रित करने का दावा करने वाला, डींगे हांकने वाला मानव एक नगण्य से वायरस के सामने बौना साबित हो रहा है जो स्वयं में जीवित भी नहीं माना जाता बल्कि किसी जीवित प्राणी के सहारे ही जीवन पाता है। हमारे शास्त्रों और महापुरुषों ने परमेश्वर और उसकी शक्ति को नेति-नेति कह कर पुकारा है। उनके अनुसार उसकी शक्ति उतनी ही नहीं है जितना हम समझते हैं, जानते हैं और खोज कर पाए हैं बल्कि इतनी है कि उसकी थाह लगाना मानव की शक्ति से परे है। उसकी शक्ति को 'वह' बनकर ही जाना सकता है

(शेष पृष्ठ 3 पर)

## 'उग्रता को शीतल करने की प्रतीक शीतला'

भारत में हर परिवर्तन एक संस्कार के साथ संपन्न होता है। ऐसा ही एक संस्कार है शीतला सप्तमी। हमने प्रकृति को माता माना है और इसीलिए प्रकृति में ऋतु परिवर्तन के इस अवसर को भी हम माता मानकर उसकी पूजा करते हैं कि अब गर्मी आ रही है, ऋतु परिवर्तन हो रहा है ऐसे में अब शीतलता की आवश्यकता रहेगी। हमारे में वह शीतलता आए इसके लिए हम प्रतीक रूप में यह पूजा करते हैं और परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि हमारी उग्रता शांत हो क्यों कि उग्रता उद्वेग उत्पन्न करती है और उससे हमारा विकास बाधित होता है। बाड़मेर स्थित आलोक आश्रम में 16 मार्च को साप्ताहिक शाखा में शीतला सप्तमी का पर्व मनाते समय माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपर्युक्त बात कही।

उन्होंने कहा कि इतिहास में उग्रता के समय किए गए कार्यों का परिणाम विनाशकारी हुआ। रावण के पिता ऋषि विश्रवा जब उग्र तपस्या में लीन थे उस समय माल्यवान दानव अपनी पुत्री को उनको भेंट करने पहुंचा। ऋषि के मना करने के बावजूद उसने विवाह के लिए आग्रह किया और उस विवाह के उपरांत उसी तपस्या के दौर में रावण की माता द्वारा रमण के आग्रह के परिणाम स्वरूप रावण का जन्म हुआ जो संसार के लिए विनाशकारी साबित हुआ। इसी प्रकार कुरु वंश की राजमाता सत्यवती द्वारा अपने पुत्र वेदव्यास को अपनी पुत्र वधुओं से नियोग करने का आग्रह करने के समय ऋषि वेदव्यास उग्र तपस्या में रत थे।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

## संयम बरतें, सावधान रहें, प्रार्थना करें

कोरोना वायरस के कारण प्रकट हुई वैश्विक विपदा के काल में माननीय संघ प्रमुख श्री ने हमें 22 मार्च को संदेश दिया कि **'इस संकट की घड़ी में किसी से कुछ नहीं मांगें, परमेश्वर से भी नहीं लेकिन हमारे से कोई कुछ मांगे तो अवश्य देवें।'** इसके उपरान्त उन्होंने कहा कि **'प्रशासन के निर्देशों का पालन करें, कहीं भी अड़े नहीं, अवमानना न करें, सावधान रहें।'** उन्होंने इस दौरान परमेश्वर की एवं उसकी शक्ति की निरन्तर आराधना कर कृतज्ञता ज्ञापित करने को प्रतिदिन हवन करने का भी निर्देश दिया।

ऐसे में हमारा दायित्व बनता है कि हम प्रशासन के निर्देशों का पालन करते हुए सर्वप्रथम अपने आपको इस बीमारी से बचाएं ताकि इसके संक्रमण की श्रृंखला का हिस्सा न बनकर हजारों लोगों का जीवन बचा सकें। परमेश्वर एवं उसकी प्रकृति की निरन्तर कृतज्ञता पूर्वक अर्चना करें। किसी से किसी प्रकार की अपेक्षा किए बिना हमारे से जो भी सहयोग एवं सहायता इस आपदा से लड़ने में हो सकती है उसे प्रशासन के दिशा निर्देशों की सीमा में रहते हुए अवश्य करें। किसी भी मानव, पशु, पक्षी या अन्य जीव की किसी आवश्यकता की पूर्ति कर सकते हैं तो अवश्य करें। अपने संसाधनों का स्वयं के लिए न्यूनतम एवं आवश्यक उपयोग करते हुए स्वस्थ रहें।

विनीत
**संचालन प्रमुख**
श्री क्षत्रिय युवक संघ

# प्रणेता से प्रेरणा

**पूज्य तनसिंह जी श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रणेता हैं। उनका जीवन हम सब स्वयंसेवकों एवं सहयोगियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनके जीवन की हर घटना हमारे लिए दिशा दर्शक है जो हमें उनके मार्ग पर बढ़ने की प्रेरणा देती है। ऐसी ही प्रेरणादायी घटनाओं का संकलन पथप्रेरक के इस कॉलम में धारावाहिक रूप से प्रकाशित किया जा रहा है।**

सन 1962 के आम चुनावों की घटना है। उन चुनावों में बाड़मेर रावल साहब द्वारा विधायक का चुनाव लड़ने की इच्छा व्यक्त करने पर पूज्य तनसिंह जी ने विधायक का चुनाव लड़ने की अपेक्षा बाड़मेर-जैसलमेर संसदीय क्षेत्र से सांसद का चुनाव लड़ा। जैसलमेर विधानसभा क्षेत्र से उस समय जैसलमेर महारावल साहब के काकोसा हुकमसिंह जी कांग्रेस से एवं पोकरण से संबद्ध अनोपसिंह रामराज्य परिषद से चुनाव लड़ रहे थे। इस चुनाव को जैसलमेर और पोकरण के राजघराने के प्रति निष्ठा के रूप में हुकमसिंह को वोट देने का माहौल बनाया गया। पूज्य तनसिंह जी भी रामराज्य परिषद से सांसद प्रत्याशी थे। जहां भी जाते अनोपसिंह जी के लिए वोट मांगते थे। पोकरण के निकट आसकन्द्रा गांव में पूज्य श्री चुनाव प्रचार करने गए। बैठक में ग्रामवासियों ने कहा कि एक वोट आपका है और दूसरा वोट महारावल साहब का। पूज्य श्री ने सबको हाथ जोड़कर विनती की कि आप मेरे वाला वोट अनोपसिंह जी को दे दें, मुझे भले ही न दें। ऐसा ही उन्होंने अपने प्रचार के दौरान अनेक गांवों में कहा। महारावल साहब को जब यह बात पता चली तो उन्होंने पूज्य श्री को बुलाया और उलाहना देने लगे। पूज्य श्री ने उनसे आग्रह किया कि विगत चुनावों में मैं बाड़मेर से विधायक का चुनाव लड़ रहा था तब आप सांसद का चुनाव लड़ रहे थे। तब भी मैने मेरी अपेक्षा आपके लिए वोट मांगे थे और आज भी यही कर रहा हूं। दोनों प्रत्याशियों में से अनोपसिंह जी मेरी पार्टी के प्रत्याशी हैं इसलिए उनको जिताने का प्रयास करना मेरा दायित्व है। मेरी हार जीत से उनकी हार जीत अधिक महत्वपूर्ण है। यह था पूज्य तनसिंह जी का दायित्व भाव। आज अपने स्वार्थ के लिए अपने साथ काम करने वालों की पीठ में छुरा घोंपने को तत्पर रहने के दौर में इस प्रकार की राजनीति के उदाहरण बिरले ही मिलते हैं। बिरले लोग ही ऐसे उदाहरण पेश कर सकते हैं और पूज्य श्री ऐसे ही बिरले महापुरुष थे। पूज्य श्री ने अपनी पुस्तक 'एक भिखारी की आत्मकथा' में अनोपसिंह जी के हारने पर मतदाता के लिए लिखा है कि 'भिखारी होने का तुमने हमको बहुत दण्ड दिया और उन चुनाव परिणामों ने मुझे जितना दुख दिया उतना दुखी मैं कभी नहीं हुआ, केवल इसीलिए कि परिश्रम करते हुए भी भिखारी काका हार गया और हारने का कारण कुछ नहीं केवल भिखारी होना ही कारण था।' उनके ये उद्‌गार तब हैं जब वो स्वयं सांसद का चुनाव जीत चुके थे अर्थात उनके लिए स्वयं का जीतना महत्वपूर्ण नहीं था बल्कि अपने साथी का जीतना महत्वपूर्ण था।

# जीवनोपयोगी जानकारी

गतांक से आगे.... - अभयसिंह रोडला

## कर्मचारी चयन आयोग (SSC)

एस एस सी (SSC) का पूरा नाम स्टाफ सेलेक्शन कमीशन है। यह केंद्र सरकार के कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग के संलग्न कार्यालय के रूप में कार्य करता है। इसके प्रमुख कार्य इस प्रकार है-

1. भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों तथा उनके संलग्न व अधीनस्थ कार्यालयों हेतु ग्रुप 'B' के सभी पदों पर तथा ग्रुप 'C' के गैर तकनीकी पदों पर भर्ती करना।

2. उपरोक्त पदों पर अभ्यर्थियों के चयन हेतु परीक्षा और साक्षात्कार का आयोजन करना।

3. पदोन्नति हेतु विभिन्न विभागीय परीक्षाओं का आयोजन करना।

एसएससी द्वारा अनेक परीक्षाएं आयोजित की जाती हैं जिनमें से दो प्रमुख परीक्षाएं और उनकी संक्षिप्त जानकारी यहाँ प्रस्तुत है :

**(1.) सी जी एल (CGL) परीक्षा:-** इसका पूरा नाम Combined Graduate Level Examination है। भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों व अधीनस्थ कार्यालयों में ग्रुप 'बी' व 'सी' के विभिन्न पदों हेतु अभ्यर्थियों का चयन करने के लिए इस परीक्षा का आयोजन किया जाता है। इसके लिए न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता स्नातक उत्तीर्ण होना है। प्रतिवर्ष आयोजित होने वाली इस परीक्षा के चार स्तर (tier) होते हैं।

(a) प्रथम स्तर (Tier- I) :- इसमें एक प्रश्नपत्र होता है जिसमें चार विषयों - सामान्य बुद्धिमत्ता व तर्कशक्ति (General Intelligence), सामान्य जागरूकता (General Awareness), गणितीय अभिरुचि (Quantitative Aptitude) तथा अंग्रेजी (English Comprehension) से प्रश्न पूछे जाते हैं। उपरोक्त चारों विषयों से 25-25 प्रश्न पूछे जाते हैं। प्रश्नपत्र 200 अंको का होता है तथा इसकी अवधि एक घंटे की होती है। यह परीक्षा ऑनलाइन अर्थात कंप्यूटर आधारित होती है।

(b) द्वितीय स्तर (Tier - II):- इसमें कुल चार प्रश्नपत्र होते हैं-

- गणितीय योग्यता (Quantitative Ability)
- अंग्रेजी भाषा व समझ (English Language and Comprehension)

**(शेष पृष्ठ 6 पर)**

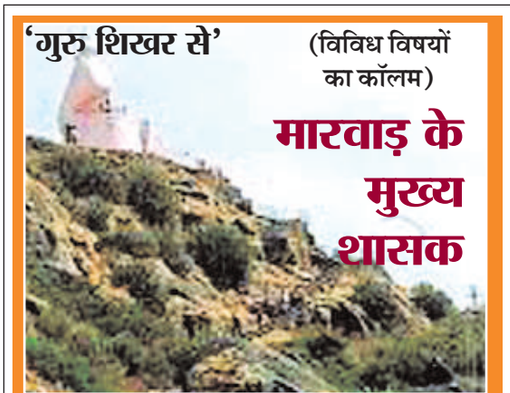


स्वरूपसिंह जिंझनियाली

राठौड़ राज्य के संस्थापक राव सीहा कन्नौज (उत्तर प्रदेश) से मारवाड़ के भू-भाग पर आए। कन्नौज के प्रसिद्ध शासक जयचन्द्र शाहबुद्दीन गौरी से युद्ध में काम आए। इतिहासकार इन्हीं जयचन्द्र का पोता राव सीहा को मानते हैं। कर्नल जेम्स टॉड राव सीहा के मारवाड़ आने का समय वि.सं. 1212 (ई. 1268) बताते हैं। इस समय दिल्ली के तख्त पर समसूद्दीन अल्तमस (बदायूं) शासन कर रहा था। जैसलमेर व पूंगल पर भाटी, सांचौर, नाडोल, जालोर पर चौहान, अनहिलवाड़ा पाटन पर चालुक्य (सोलंकी), खेड़ पर गोहिल, जांगलू प्रदेश पर मोहिल व जोहिया, मण्डोर पर इन्दा प्रतिहार आदि का आधिपत्य था।

राव सीहा के पुत्र आस्थान जी ने खेड़ के गोहिलों को हराकर उसे अपनी राजधानी बनाया। आस्थान जी के पुत्र धूहड़ जी राठौड़ों की कुलदेवी नागणेची जी को नागाणा लाए। राव सीहा की नवमी पीढी में वीर एवं संत माला हुए। उनके गुरु योगी रतननाथ ने नाथ सम्प्रदाय में दीक्षित कर मल्लीनाथ नाम दिया। तथा रावल की उपाधी दी। वे वि.सं. 1430 में खेड़ की गद्दी पर बैठे। मल्लीनाथ के नाम से वर्तमान बाड़मेर जिले का क्षेत्र मालाणी कहलाता है। इनके वंशज जसोल, सिणधरी, बाड़मेर, चौहटन, बिशाला, कोटड़ा, गिराब, पोकरण में निवासरत हैं तथा इन्हीं स्थानों के नाम से महेचा (महोबा), बाड़मेरा, कोटड़िया खावड़िया (गिराब खावड़), पोकरण आदि कहलाते हैं। इनके एक भाई जेतमाल के वंशज राड़धरा में गुडा एवं नगर के शासक रहे। इनके एक भाई वीरमदे के दो पुत्रों देवराज एवं गोगादे के वंशज शेरगढ़ परगने के सेतरावा एवं सेखाला के स्वामी बने। थली क्षेत्र में बसने के कारण ये थलेचा राठौड़ कहलाएं तथा एक अन्य पुत्र चूण्डा ने इन्दा प्रतिहारों के सहयोग से मण्डोर पर राज्य स्थापित किया। चूण्डा के वंशजों की ही अन्य सारी राठौड़ रियासतें एवं जगीरदारियां भारत भर में हैं। मल्लीनाथ जी के समकक्ष दिल्ली पर तुगलक वंश की सल्तनत थी। रावल मल्लीनाथ एवं उनके भतीज राव चूण्डा के राज्यकाल के समय दिल्ली पर तैमूर ने आक्रमण किया था। इस समय दिल्ली पर तुगलक व मालवा, गुजरात, जालोर, नागौर, सिन्ध (सम्मा वंश) में मुस्लिम सूबेदारी थी। मेवाड़ पर शिशोदिया तथा जैसलमेर पर भाटी राजपूत शासक थे। अपने राज्य विस्तार में उक्त सब सत्ताओं से राठौड़ों को लोहा लेना पड़ा। मण्डोर के प्रतिहार ईन्दों ने तो राजनीतिक सूझबूझ से राव चूण्डा को अपना दामाद बनाकर मण्डोर का राज्य दहेज स्वरूप भेंट कर दिया। रावल मल्लीनाथ ने अपने स्वर्गवासी भाई वीरमदे के पुत्र राव चूण्डा को मण्डोर से राज्य संचालन करने में संरक्षक की भूमिका अदा की थी। यही से मारवाड़ में राठौड़ राज्य की सशक्त नींव पड़ी। राव चूण्डा के पुत्र राव रणमल (रिड़मल) मेवाड़ और मारवाड़ दोनों राज सत्ताओं में प्रत्यक्ष - अप्रत्यक्ष रूप से काबिज रहे। मेवाड़ के राणा कुम्भा के पिता राणा मोकल राव रणमल के भाणेज थे। राव रणमल ने मेवाड़ के राणा कुम्भा की तरफ से माण्डू (मालवा) के सुल्तान महमूद खिलजी प्रथम को हराया था, जिसकी याद में चित्तौड़ का विजय स्तम्भ बनाया गया। मण्डोर के राव चूण्डा के पौत्र राव जोधा ने अपने नाम से जोधपुर बसाया। जोधा ने मेवाड़ में अपने पिता राव रणमल के मारे जाने के बाद बहुत संघर्ष किया। जोधा के पुत्र राव बीका ने जांगलू प्रदेश में नवीन राज्य बीकानेर की स्थापना की। जोधपुर एवं बीकानेर दोनों राज्यों की स्थापना में माता करणी जी का विशेष आशीर्वाद रहा। रणमल की मृत्यु के पश्चात मण्डोर पर राणा कुम्भा का शासन हो गया था जिसे हस्तगत करने में राव जोधा को अपने भाई बन्धुओं यथा मालाणी के महेचो, सिवाणा के राड़धरों (जेतमाल), पोकरण में पोकरणा राठौड़ों, सेतरावा व सेखाला के देवराज एवं गोगादे राठौड़ों तथा संबंधियों के रूण के सांखला हड़बूजी (लोकदेवता), बालेसर के इन्दों, गांगसेन (हाड़ोती) के खीची चौहानों, पूंगल के भाटी अर्जुन, जैसलमेर के रावल हरजी के पौत्र तथा रावल किलकर्ण के पुत्र जैसा भाटी आदि का सहयोग रहा। जोधा का राजतिलक उनके बड़े भाई अखेराज ने अपने अंगूठे को तलवार से चीर कर रक्त से किया। तब से ही अखेराज के पुत्र जेताजी के वंशज बगड़ी के जैतावत ठाकुर इसी परम्परा का निर्वहन करते आए हैं। जोधपुर दुर्ग की नीव वि.सं. 1516 जेठ सुदी 11 शनिवार (मई 12-1459 ई.) को दी गई। राव जोधा के पुत्रों से राठौड़ों की जोधा, बीका (राजवी), बीदावत, नरावत, उदावत, बाघावत मेड़तिया, चांदावत, करमसोत, रायपाल आदि खांपे निकलीं।

राव जोधा की चौथी पीढ़ी में राव मालदेव हुए। 'रूठी राणी' के नाम से प्रसिद्ध जैसलमेर की राजकुमारी उमादे भटियाणी इन्हें ब्याही गई थीं। **(शेष पृष्ठ 5 पर)**

# प्रकृति के प्रकोप के बीच शक्ति पर्व

आलोक आश्रम, बाड़मेर

धोलेरा, गुजरात

पीपली, अलवर

**(पृष्ठ एक से लगातार)** और उसने मानव को 'वह' बनने की शक्ति भी प्रदान की, प्रक्रिया भी प्रदान की। इसीलिए हमारे शास्त्रों ने हमारी संस्कृति ने और हमारे महापुरुषों ने उसकी शक्ति प्रकृति को परमेश्वर ही मानकर कृतज्ञता पूर्वक नमन करने का मार्ग बताया। लेकिन पश्चिम में पनपी उपभोगवादी संस्कृति ने प्रकृति को कब्जे में करने का मार्ग अपनाया और आज भी अपनाएं हुए है। हमने भी उसी का अनुसरण किया और परिणामतः परमेश्वर की आद्यशक्ति की पूजा करते हुए भी उसके पार्थिव स्वरूप प्रकृति को उपभोग की दृष्टि से देखने लगे। लेकिन यह शक्ति पर्व, उस आद्यशक्ति की आराधना का पर्व नवरात्रा हमारे सामने एक नए दृष्टिकोण के साथ आया है, जैसे उलाहना दे रहा है कि संसार की भोग दृष्टि में भारत भी शामिल हो गया इसलिए आएं इस उलाहने को स्वीकार करें और प्रकृति माता को कृतज्ञतापूर्वक नमन करना सीखें क्यों कि कृतज्ञता के भाव ने ही हमारी इस महान संस्कृति को महान बनाया है। संघ के माननीय संघ प्रमुख श्री बार-बार इसी महानता को हमें समझाते रहते हैं। इस बार भी उन्होंने इसी प्रकार समझाते हुए निर्देश दिया कि हम सब इस आपातकाल में परमेश्वर की आराधना करें। संघ द्वारा निर्दिष्ट दैनिक यज्ञ विधि के अनुसार यज्ञ करें। दुर्गा सप्तशती की सप्त श्लोकी के मंत्रों के साथ आहूति देवें। लेकिन अपने लिए कुछ न मांगे बल्कि अपना दायित्व समझ उस आद्य शक्ति की अर्चना करें। 22 मार्च को जनता कर्फ्यू के दिन से लगातार स्वयंसेवक अपने घरों में यज्ञ कर रहे हैं एवं प्रकृति के प्रकोप के बीच उसी प्रकृति शक्ति के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित कर रहे हैं।

जैसलमेर

बेलवा, जोधपुर

रामगढ़, जैसलमेर

# संक्षिप्त दैनिक यज्ञ विधि (भूमिका)

**(हमारी भारतीय संस्कृति में यज्ञ को बहुत महत्व दिया गया है। जीवन का हर संस्कार यज्ञ के साथ ही संपन्न होता है। इसी महत्व के मद्देनजर श्री क्षत्रिय युवक संघ द्वारा प्रतिदिन की जाने वाली उपासना हेतु संक्षिप्त दैनिक यज्ञ विधि का संकलन एक पुस्तक के रूप में किया गया। इस दैनिक यज्ञ का महत्व माननीय संघ प्रमुख श्री ने इस पुस्तक की भूमिका में स्पष्ट किया है। उसी भूमिका को यहां पाठकों के साथ साझा किया जा रहा है।)**

जब व्यक्ति संकट में होता है और ढूंढने पर भी कोई सहारा नहीं मिलता, तब वह अव्यक्त, अदृश्य, अप्रगट, अज्ञात परमेश्वर की शरण में सहज ही जाने का प्रयास करता है। यद्यपि उसका विश्वास ईश्वर में भी दृढ़ नहीं कहा जा सकता किन्तु उसकी विवशता ही उसे प्रेरित करती है उस तत्व व शक्ति की खोज करने के लिए। यदि उसको इस व्यक्त, दृश्यमान, प्रगट एवं ज्ञात संसार में संकट को पार करने के लिए सहारा मिल जाता तो इस खोज का जन्म ही नहीं होता। परन्तु जब ऐसा नहीं होता, निरीह अवस्था में अनजाने में व्यक्ति के मन, मस्तिष्क एवं हृदय में आस्तिकता का प्रस्फुटन होता है। यह प्रस्फुटन ही उसमें विकलता बढ़ाता है जिसके कारण ही उसके हृदय में एक आर्त पुकार उठती है और तब जन्म होता है, उपासना का। इस दृष्टिकोण से व्यक्ति की निर्बलता ही उसको बल प्रदान करती है।

**छान्दोग्योपनिषद् में ऋषि ने कहा है :**

| | | |
|---|---|---|
| स यदा बली भवति | - | जब वह (व्यक्ति) बलवान बनता है। |
| अथ उत्थाता भवति | - | तब वह उठने वाला बनता है। |
| उतिष्ठत परिचरिता भवति | - | उठने पर परिचर्या (सेवा) होती है। |
| परिचरन उपसता भवति | - | पास बैठने वाला, देखने वाला बनता है। |
| श्रोता भवति | - | तब सुनने वाला बनता है। |
| मन्ता भवति | - | तब मनन करता है। |
| बोद्धा भवति | - | तब ज्ञान होता है। |
| कर्ता भवति | - | तब अनुष्ठान करता है। |
| विज्ञाता भवति | - | अनुभव करता है। |

**जो विज्ञाता है, वह प्राप्त करता है।**

अर्थात निर्बलता के बल पर उपासना का आविष्कार होता है, जब शरण हीन को शरण मिलती है और वह आगे की सतत् यात्रा से सब कुछ प्राप्त करता है। आज के युग में संकटों से घिरी मानवता इसी भंवर में फंसी हुई अनुभव कर रही है। जो लोग इस विवशता को अनुभव कर रहे हैं, उनकी निर्बलता ही उन्हें उपासना का मार्ग ढूंढने को विवश कर रही है। हमारे वेद, उपनिषद एवं धर्म शास्त्र इस उपासना का मार्ग बताते हैं।

इसी विवशता ने हमें भी अध्ययन और खोज के लिए विवश किया और जो मार्ग मिला उसे साधकों के समक्ष प्रस्तुत करने का बल मिला। आज के आपाधापी और व्यस्तता के जीवन में कम से कम समय में, कम से कम साधनों से जो अनुष्ठान किया जा सकता है उतना ही प्रस्तुत किया जा रहा है, जिसको हर कोई अपना सकता है। इस उपासना विधि को तीन खण्डों में विभाजित किया जा रहा है। प्रथम खण्ड प्रार्थना खण्ड, द्वितीय खण्ड अनुष्ठान खण्ड तथा तृतीय खण्ड विनय खण्ड है। प्रथम खण्ड में व्यक्ति का सर्वशक्तिमान, सृष्टि के सृजनहार और उसकी सृष्टि के प्रति कृतज्ञता का भाव है। द्वितीय खण्ड में उस कृतज्ञता से विकल हो भेंट स्वरूप कुछ करने का भाव है और अग्नि को उसी सत्ता का स्वरूप मान हविष्य रूप में भेंट कर यज्ञ का विधान बताया गया है। तृतीय खण्ड में साधक अकिंचन होकर अपनी अज्ञता के साथ उस परमेश्वर को धन्यवाद देता हुआ अपने जीवन को उत्तम कर्मों से यज्ञमय बनाने के लिए सहायता मांगता हुआ तन्मय हो उसका गुणगान कर उठता है।

यह औपचारिक विधि साधक को उच्च, उच्चतर और उच्चतम बनाने में सहायक बनाने के लिए उठाया गया कदम है। **(इस विधि को अपनाकर जो औपचारिकताओं में ही उलझ जाएगा वह पाखण्डी बन जाएगा और जो मर्म को समझकर उपासना में तत्पर होगा वही आगे की ओर बढेगा, इसीलिए अर्थ को समझकर जो तद्नुकूल अपना आचरण करेगा वही और केवल वही विराटता की ओर बढ़ता हुआ अपने जीवन को तपस्वी बनाएगा। तभी वह अपने मन को वश में कर सकेगा, तभी अपने आप को प्राप्त करेगा और तभी उसके लिए मोक्ष द्वार खुलेंगे।)** इसीलिए साधकों से निवेदन है कि वे वेदों की ऋचाओं, उपनिषद् के मंत्रों तथा धर्मशास्त्रों के श्लोकों के दिए गए गूढ अर्थ को भली प्रकार समझकर ही इस विधि को अपनाएं।

अर्थ समझने के प्रयास में प्रथम तो लगेगा जैसे यह सारी सकाम उपासना है परन्तु अर्थ की गहनता में जाने पर पता चल जाएगा कि स्थूल की उपासना सूक्ष्म की ओर जाने के लिए है तथा यही सकाम भाव निष्काम भाव का सृजन करेगा और निष्काम भाव ही कर्तव्य कर्मों को करने की प्रेरणा देता है। निष्काम कर्म का फल सदैव भगवद् अर्पण किया हुआ होता है और इसी क्रम से व्यक्ति के कर्मफल निःशेष हो जाने पर मोक्ष के द्वार खुल जाते हैं।

**- भगवानसिंह रोलसाहबसर**

संपादकीय

# लोक कल्याणकारी राज्य और समाज

लोक कल्याणकारी राज्य और लोक कल्याणकारी समाज ये दोनों पृथक बातें हैं। भारत में राजा के लिए कहा गया कि प्रजा के सुख में ही राजा का सुख है और प्रजा के हित में ही राजा का हित है। यह एक प्रकार से लोक कल्याणकारी राज्य का स्वरूप है लेकिन प्रजा का सुख और प्रजा का हित क्या हो, किसे हित या सुख माना जाए, यह प्रश्न भी इतना ही महत्वपूर्ण है। भारत में राम राज्य को आदर्श राज्य माना जाता है लेकिन उसमें भी शंबूक को स्तर के प्रतिकूल आचरण करने पर दंडित करने की कथा प्रचलित है ऐसे में हमें वास्तविक हित और सुख को समझ लेना चाहिए। भारत के विचार दर्शन में कुछ भौतिक सुविधाएं जुटा देना मात्र ही सुख और हित का हेतु नहीं होता लेकिन वर्तमान में लोक कल्याणकारी राज्य की जो अवधारणा प्रचलित है उसमें केवल अर्थ से संबद्ध विषय ही शामिल हैं। लोक कल्याणकारी राज्य की वर्तमान अवधारणा भारत की उस प्राचीन अवधारणा से संबद्ध नहीं हैं जहां राजा को अपनी प्रजा का सर्वांगीण नेता माना जाता था और उसे परमेश्वर का प्रतिनिधि मानकर उससे अपेक्षा की जाती थी कि वह अपनी प्रजा का पुत्रवत पालन करे। भगवान श्री कृष्ण द्वारा गीता के अठारहवें अध्याय में बताए गए क्षत्रिय के गुणों में से अंतिम 'ईश्वरीय भाव' इसी लोक कल्याणकारी राज्य की अवधारणा का विकसित स्वरूप है। संसार में वर्तमान में प्रचलित लोक कल्याणकारी राज्य की अवधारणा का आधार गीता का ईश्वरीय भाव नहीं है बल्कि पश्चिम के अधिनायकवाद की प्रतिक्रिया है। पूंजीपतियों व राज्य की सत्ता के मेल के कारण भौतिक रूप से जीवन निर्वाह के लिए असमान अवसरों के विरुद्ध पनपे विचार की परिणति है वर्तमान में प्रचलित यह अवधारणा। इस अवधारणा के अनुसार राज्य को अपने सभी नागरिकों के न्यूनतम जीवन निर्वाह के लिए व्यवस्था करनी चाहिए। सैद्धान्तिक रूप से यह एक आकर्षक अवधारणा है जिसमें राज्य को यह दायित्व सौंपा जाता है कि वह उस अंतिम व्यक्ति के बारे में सोचे जो अपने जीवन निर्वाह के साधन भी भली प्रकार नहीं जुटा पा रहा है। लेकिन इसका व्यवहारिक स्वरूप देखेंगे तो इसमें अनेक दोष दिखाई देंगे जो विकृतियों के कारक बन रहे हैं। सबसे बड़ी विकृति तो यह है कि इस व्यवस्था से व्यक्ति के स्वतः स्फूर्त जीवन में राज्य का हस्तक्षेप अनावश्यक रूप से बढ़ता जाता है और परिणामतः व्यक्ति की सामान्य जीवन चर्या में भी राज्य दखलंदाजी करने लगता है जिसके विरुद्ध आजकल निजता के अधिकार की बातें प्रचलन में हैं। लोक कल्याणकारी योजनाओं के नाम पर आज राज्य के पास अपने नागरिक की समस्त प्रकार की जानकारियां संग्रहित हैं और एक प्रकार के व्यक्ति की निजाता सत्ताधीशों की मुट्ठी में कैद होती जा रही है। दूसरी बड़ी विकृति यह है कि व्यक्ति एक सीमा से अधिक राज्य पर निर्भर होता जा रहा है। व्यक्ति का स्वयं का पुरुषार्थ कुंद होता जा रहा है और वह अपनी हर आवश्यकता के लिए राज्य का मुंह ही नहीं ताकता बल्कि अपना अधिकार भी जताने लगा है। लोकतांत्रिक व्यवस्था का इस अवधारणा के साथ मेल होने का परिणाम यह हो रहा है कि वर्तमान सत्तासीन पुनः सत्ता में आने के लिए लोक कल्याणकारी योजनाओं के नाम पर राज्य के संसाधनों का जनता में बांटने की हद तक चले जाते हैं और परिणाम स्वरूप मतदाता को प्रसन्न रखने का उद्यम राष्ट्र एवं समाज के हितों की बलि देने को तत्पर नजर आता है। जनता भी यह सोचती है कि राज्य का धन मेरा नहीं बल्कि राज्य का है और इसमें से जितना मेरे पल्ले पड़े उतना ही कम है। सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न सब्सिडी योजनाएं इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। जरूरत मंद तो पीछे रह जाता है और प्रभावशाली लोग इस बंदरबांट का अधिकतम लाभ उठाते हैं। इस प्रकार यह व्यवस्था जहां एक ओर राज्य के संसाधनों के दुरुपयोग को प्रेरित करती है वहीं जनता की श्रमशक्ति को कुंद कर उसे राज्य पर आवश्यकता से अधिक निर्भर बनाती है। पूंजीपति और राजसता के जिस गठजोड़ के विरूद्ध यह अवधारणा पैदा हुई थी वह तो बदस्तूर जारी है और लोक कल्याण के नाम पर जनता को कुछ भौतिक सुविधाओं के टुकड़े डालकर राजसत्ता व पूंजीपति अपनी रोटी सेकते रहते हैं। लेकिन ऐसे में क्या यह माना जाए कि लोक कल्याण की अवधारणा गलत है? ऐसा नहीं है। लोक कल्याण व्यवस्था का आधार बनना ही चाहिए लेकिन इसमें राज्य का स्थान समाज को लेना चाहिए। समाज यदि लोक कल्याणकारी बनेगा तो राज्य को लोक कल्याण की अपेक्षा अपने मूल कार्य में अधिक ध्यान देने का अवसर मिलेगा। यदि राज्य अपने मूल काम कानून, व्यवस्था, न्याय, शासन, प्रशासन आदि में अपनी ऊर्जा को प्राथमिकता से लगाएगा तो वह अप्रत्यक्ष रूप से समाज को लोक कल्याणकारी बनने के अनुकूल परिस्थितियां पैदा कर पाएगा और यदि समाज का स्वरूप लोक कल्याणकारी हो जाएगा तो फिर अवसरों की असमानता को समाज मिटाएगा। वह यथाशक्ति हर व्यक्ति का जीवन निर्वाह करेगा। इसके लिए व्यक्ति का शिक्षण इसी दृष्टिकोण से किया जाए और ऐसे लोगों से बना समाज स्वयं में लोक कल्याणकारी होगा। भारत की आचार संहिता इसी आधार पर विकसित हुई थी। एक गृहस्थ पर सबके पालन पोषण का भार होता था और वह ऐसा करना अपना दायित्व भी समझता था। समाज का स्वरूप यदि लोक कल्याणकारी हो जाए तो मदद भी उसी को मिलेगी जिसको आवश्यकता होगी, इससे समाज के संसाधनों का भी सदुपयोग होता है लेकिन यदि यही कार्य राज्य करने लगेगा तो वह इस प्रकार का चिह्नीकरण भली प्रकार नहीं कर पाता। विभिन्न सरकारी योजनाओं का व्यवहारिक स्वरूप इसके उदाहरण के रूप में हमारे सामने है। इसलिए भारत में जो व्यवस्था विकसित हुई उसमें राज्य की अपेक्षा समाज के स्वरूप को लोक कल्याणकारी बनाने पर जोर दिया गया। लेकिन दुर्भाग्य से हमने दूसरों की नकल करने की होड़ में अपना सब कुछ छोड़ने की प्रवृत्ति अपनाई और परिणाम स्वरूप विकास के नाम पर विनाश को आमंत्रित कर रहे हैं।

खरी-खरी

## 'कृतज्ञता और समाज व्यवस्था'

पूज्य तनसिंह जी ने अपनी पुस्तक 'लापरवाह के संस्मरण' के अध्याय 'कृतज्ञता' में लिखा है कि **'जो सेवक की सेवा को कर्तव्य पालन की संज्ञा देकर अपने ज्ञान के बोझ से बेहाल हो जाता है, वह नहीं जानता कि हर मनुष्य उपकार के बदले में कृतज्ञ हुए बिना नहीं रह सकता। कृतज्ञता से ही मनुष्य की उत्कृष्टता नापी जा सकती है। सेवा से जो कृतज्ञ हो जाता है, वह सेवा की कीमत चुकाता है। समाज और नैतिकता की भव्य इमारत इसी कृतज्ञता की बुनियाद पर खड़ी है।'** इस अवतरण की अंतिम पंक्ति में समाज व्यवस्था की ओर इंगित है। बताया गया है कि भारतीय समाज व्यवस्था का आधार यह कृतज्ञता ही थी। ब्राह्मण शेष तीनों वर्गों का कृतज्ञ होता था कि कोई उसकी रक्षा कर रहा है। कोई उसके जीवन निर्वाह के साधन जुटा रहा है तो कोई सेवा में तत्पर है। इसी प्रकार क्षत्रिय शेष तीनों वर्णों के प्रति कृतज्ञ था तो ऐसे ही वैश्य और शुद्ध कृतज्ञता अनुभव करते थे। यह कृतज्ञता ही उस समाज व्यवस्था की भव्य इमारत की बुनियाद थी। सभी एक दूसरे के प्रति कृतज्ञ थे इसलिए कोई बड़ा या छोटा नहीं था बल्कि इसमें भी आगे जाएं तो एक अपने आपको शेष तीन से छोटा ही मानता था। लेकिन कालांतर में यह बुनियाद दरकने लगी और इस अवतरण की पहली पंक्ति की ओर समाज बढ़ने लगा कि सेवक की सेवा को कर्तव्य पालन की संज्ञा दी जाने लगी। ब्राह्मण सहित शेष तीन वर्ण शुद्ध की सेवा को उसका कर्तव्य बताकर अपना अधिकार समझने लगे। बात जब स्वयं के अधिकार और सामने वाले के कर्तव्य पर आकर अटक जाती है तो कृतज्ञता लुप्त हो जाती है। फिर क्षत्रिय द्वारा शेष तीनों वर्णों के लिए अपना जीवन न्यौछावर करना उनका कर्तव्य माना जाने लगा और शेष तीनों का अधिकार। इसी प्रकार वैश्यों द्वारा समाज की व्यवस्था हेतु धर्नाजन कर कर, दान भेंट आदि के रूप में अन्य वर्णों को दिया जाना भी उसका कर्तव्य माना जाने लगा और शेष तीनों का अधिकार। ऐसा ही शुद्रों के साथ हुआ और ईमानदारी पूर्वक स्वीकार करें तो अन्य तीनों की अपेक्षा उनके साथ ज्यादा ही हुआ। एक ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य किसी शुद्र के द्वारा मेला उठाने में कृतज्ञ होने की अपेक्षा उनका कर्तव्य और अपना अधिकार मानने लगे। मिथ्या ज्ञान के बोझ तले दबकर वे इस प्रकार की सोच के कारण समाज के एक बड़े वर्ग के प्रति अहसानमंद होकर उनके आत्म सम्मान को बढ़ाने की अपेक्षा उनके आत्म सम्मान में हंता बनने लगे और परिणाम स्वरूप पूरे समाज में एक कुंठित व दलित वर्ग तैयार हो गया जिसके अंतर में इस व्यवस्था के प्रति विद्रोह ने जन्म लिया। पूज्य तनसिंह जी के उपरोक्त अवतरण के अनुसार इस प्रकार सोचने वाले लोग मनुष्यता से नीचे गिर गए क्यों कि मनुष्य तो उपकार के बदले कृतज्ञ हुए बिना नहीं रह सकता। पूज्य श्री ने तो लिखा है कि कृतज्ञता से ही मनुष्य की उत्कृष्टता नापी जाती है। लेकिन इस अपने अधिकार और अन्यों के कर्तव्य की चिंता करने वाली विकृति ने भारत की भव्य सामाजिक व्यवस्था को मनुष्यता के स्तर से गिराया और मानव के साथ मानवेत्तर व्यवहार करने को प्रेरित किया। जरा हम विचार करें कि एक व्यक्ति यदि व्यवस्थागत मजबूरी के कारण किसी व्यक्ति की सेवा करने को मजबूर हो तो क्या वह व्यवस्था के प्रति लगाव रख पाएगा? लेकिन यह मजबूरी बन कैसे गई? कृतज्ञता के तिरोहित होने के कारण बनी। काम वह बाद में भी वही कर रहा था जो पहले करता था लेकिन उसका भाव बदल गया। पहले उसके काम के प्रति शेष लोग कृतज्ञ हुआ करते थे, वह कृतज्ञता ज्ञापित भी करते थे, उसके दायित्व निर्वहन का एहसान मानते थे तो वह गर्व अनुभव करता था लेकिन उनकी कृतज्ञता तिरोहित हुई तो गर्व का स्थान हीन भावना ने ले लिया। इसी हीन भावना ने उसमें विद्रोह का भाव पैदा किया और समय आने पर उसके उस विद्रोह ने उस भव्य इमारत को ढहा दिया। आज वह विद्रोह बदला लेने को उतारू है, चारों तरफ बदला लेने के स्वर सुनाई दे रहे हैं। ऐसे में हमारा दायित्व बनता है कि हम उनके पूर्वजों के प्रति कृतज्ञता का अनुभव करते हुए वर्तमान व्यवस्था के अनुरूप उनमें सौहार्द की पहल करें। उनके बदला लेने की भावना के प्रति उदार होकर उनकी मनःस्थिति को समझने का प्रयत्न करें। लेकिन यह बड़ा मुश्किल काम है। सामने की तरफ से जब सहयोग की अपेक्षा विरोध के स्वर उठ रहे हों तब सौहार्द के लिए हाथ बढ़ाना मुश्किल होता है। ऐसे में ही हमारे धैर्य की परीक्षा होती है। **(शेष पृष्ठ 6 पर)**

## शिविर सूचना

| क्र.सं. | शिविर | समय | स्थान मार्ग आदि |
|---|---|---|---|
| (क) | 11 दिवसीय प्रशिक्षण शिविर (बालक) | 18.05.2020 से 28.05.2020 तक | **श्री कच्छ कड़वा पाटीदार विद्याधाम, पिराना, अहमदाबाद (गुजरात)** (सरदार पटेल रिंग रोड से 2 किमी अंदर) |

1. अहमदाबाद रेलवे स्टेशन से 16 किमी दूर। रेलवे स्टेशन से ए.एम.टी.एस. बस नं. 117/1 सीधे शिविर स्थान पर जाएगी। अहमदाबाद बस स्टैण्ड से 14 किमी. दूर।
2. इस शिविर में 10वीं की परीक्षा दे चुके एवं एक माध्यमिक तथा दो प्राथमिक शिविर कर चुके शिविरार्थी ही शामिल हो सकेंगे।
3. झनकार, निर्देशिका एवं मेरी साधना पुस्तकें साथ लावें।

| | | | |
|---|---|---|---|
| (ख) | 07 दिवसीय प्रशिक्षण शिविर (बालिका) | 18.05.2020 से 24.05.2020 तक | **प्राथमिक शाला, काणेटी, अहमदाबाद (गुजरात)** |

1. अहमदाबाद से बस द्वारा साणंद पहुंचना है। वहां से काणेटी पहुंचे।
2. इस शिविर में 10वीं की परीक्षा दे चुकी बालिकाएं अथवा 15 वर्ष कर चुकी आयु प्राप्त की बालिकाएं आ सकती हैं पर उन्होंने पहले कम से कम संघ के दो शिविर किए हुए हों।
3. महिलाएं आती हैं तो पूर्व स्वीकृति आवश्यक है।
4. संध्याकालीन प्रार्थना में साड़ी अथवा लहंगा-लूगड़ी होगी।

**25 अप्रेल तक शिविर में आने के इच्छुक बालक-बालिकाएं अपने प्रांत प्रमुख को अवश्य सूचित करें।**

शिविर में आने वाले युवक काला नीकर, सफेद कमीज या टीशर्ट, काली जूती या जूता व युवतियां केसरिया सलवार कमीज, कपड़े के काले जूते, मौसम के अनुसार बिस्तर (एक परिवार से दो जने हों तो अलग-अलग), पेन, डायरी, टॉर्च, रस्सी, चाकू, सूई-डोरा, कंघा, लोटा, थाली, कटोरी, चम्मच, गिलास साथ लेकर आवें। संघ साहित्य के अलावा कोई पत्र-पत्रिका, पुस्तकें एवं बहुमूल्य वस्तुएं साथ ना लावें।

**दीपसिंह बैण्यांकाबास,** शिविर कार्यालय प्रमुख

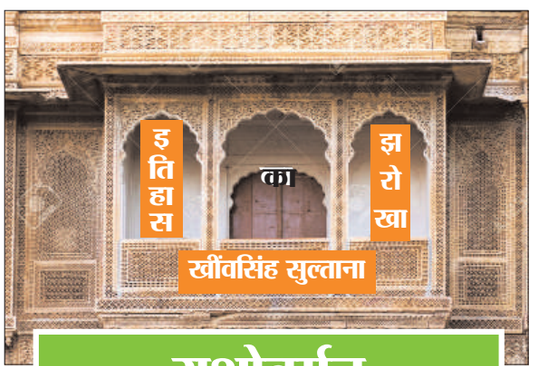


## यशोवर्मन

हर्षवर्धन की मृत्यु के पश्चात उत्तर भारत में एक बार पुनः राजनीतिक विकेन्द्रीकरण और विभाजन की स्थितियां उत्पन्न हो गई। हर्ष के कोई पुत्र ना होने के कारण उसका साम्राज्य उसके अधीनस्थ शासकों व सेनापतियों में विभक्त हो गया था। अनेक छोटे-छोटे स्वतंत्र राज्यों का उदय हुआ। हर्ष की मृत्यु के बाद अगले 50-60 वर्षों तक कन्नौज का इतिहास अन्धकारमय नजर आता है, इस अंधकार की कालिमा जब दूर होती है तो हम कन्नौज के राज सिंहासन पर यशोवर्मन नामक एक शक्तिशाली व महत्वकांक्षी शासक को आसीन पाते हैं। उसका राज्यकाल लगभग 700 ई. से 735 ई. मध्य रखा जा सकता है। यशोवर्मन के बारे में जो ऐतिहासिक जानकारी प्राप्त होती है वह यशोवर्मन के नालन्दा अभिलेख और वासपति द्वारा रचित 'गौडवहों' से मिलती है।

यशोवर्मन के प्रारंभिक जीवन के बारे में निश्चयात्मक रूप से कुछ कहा नहीं जा सकता है कुछ विद्वान उसका संबंध मौखरी वंश से जोड़ते हैं, वहीं गौडवहों में उसे चन्द्रवंशीय क्षत्रिय कहा गया है। गौडवहों में यशोवर्मन की विजयों का अतिश्योक्तिपूर्ण विवरण मिलता है इसके अनुसार यशोवर्मन ने सर्वप्रथम मगध पर आक्रमण किया और मगध के उत्तर गुप्त वंशीय शासक जीवित गुप्त (द्वितीय) को परास्त कर उसका राज्य अपने राज्य में मिला लिया। इतिहासकारों के एक वर्ग का मानना है कि मगध के जीवित गुप्त का शासन बंगाल पर भी था जिससे वो भी यशोवर्मन के आधिपत्य में आ गया जबकि गौड़वहों के अनुसार यशोवर्मन ने बंगाल पर आक्रमण कर उसे विजित कर अपने साम्राज्य में मिलाया। इसके उपरान्त उसने पारसी को परास्त किया और पश्चिम घाट के दुर्गम प्रदेशों को भी अधीनता स्वीकार करवाई। उसने राजस्थान के स्थानीय शासकों को भी परास्त किया। गोड़वहों के अनुसार उसने हिमालय प्रदेश के शासकों को भी परास्त किया और अपनी दिग्विजय नीति को फलीभूत किया। उसकी एक अन्य महत्वपूर्ण उपलब्धि उसकी अरबों पर विजय थी। सिन्ध पर विजय के बाद अरबो ने कन्नौज पर आक्रमण किया परन्तु यशोवर्मन ने अपने पराक्रम से उन्हें परास्त कर खदेड़ दिया। अरबों के विरुद्ध इस युद्ध में कश्मीर के शासक ललितादिव्य ने यशोवर्मन का सहयोग किया। कालान्तर में दोनों शासकों की महत्वाकांक्षाओं ने उनके मध्य एक दीर्घ संघर्ष को जन्म दिया जिसमें अंत में यशोवर्मन को पराजय का सामना करना पड़ा। चालुक्य अभिलेखों में भी यशोवर्मन का उल्लेख समलोतरापथनाथ के रूप में किया गया है। एक विजेता और साम्राज्य निर्माता होने के साथ-साथ यशोवर्मन स्वयं उच्च कोटि का विद्वान और विद्वानों का आश्रयदाता था। गोडवहों का रचियता 'वास्पतिराज' और संस्कृत के महान नाटककार 'भवभूति' उसके दरबार की शोभा बढ़ाते थे। व्यक्तिगत रूप से वह शैव धर्म का अनुयायी था परन्तु वह एक धर्मसहिष्णु व लोक कल्याणकारी शासक था जिसने अपने पुरुषार्थ से महान भारतीय शासकों की परम्परा में अपना स्थान बनाया। **(क्रमशः)**

### मारवाड़ के... (पृष्ठ दो का शेष)

राव मालदेव के पिता राव गांगा ने बाबर के विरुद्ध खानवा के युद्ध में राणा सांगा की सहायता की थी। मालदेव के विरुद्ध सुमेल गिरि युद्ध में शेरशाह सूरी को कहना पड़ा था 'मुट्ठी भर बाजरे के खातिर मैं हिन्दुस्तान की सल्तनत खो देता।' इस युद्ध में मारवाड़ के बड़े-बड़े वीर काम आए। बगड़ी ठाकुर जैता अखेराजोत, आसोप के कूम्पा राठौड़, निंम्बाज रायपुर के पूर्वज राठौड़ खींवकरण उदावत, खींवसर के पंचायण कर्मसोत, पाली ठाकुर चौहान अखैराज सोनिगरा, लवेरा बावड़ी के ठाकुर जैसा, भाटी नीम्बा आदि प्रमुख थे। मालदेव के राज्यकाल में दिल्ली पर शेरशाह सूरी व उसके वंशज, हुमायु तथा अकबर, गुजरात व सिन्ध पर शाह वंश के शासक, मेवाड़ के राणा रतनसिंह एवं विक्रमादित्य, राणा उदयसिंह, आमेर पर राजा पूरणमल, भीम, रतन व भारमल, जैसलमेर पर रावल लूणकर्ण व मालदेव, सिरोही पर महाराव अखैराज, रायसिंह आदि शासक थे। मालदेव के पुत्र राव चन्द्रसेन ने कुछ समय मारवाड़ पर शासन किया। ये महाराणा प्रताप के समकालीन तथा वैसे ही वीर क्षत्रिय थे परन्तु इतिहास ने इन्हें प्रताप सा सम्मान नहीं दिया। चन्द्रसेन का पोत्र रायसिंह अकबर व सिरोही के राव सुरताण देवड़ा के मध्य दत्ताणी के युद्ध में काम आया था। चन्द्रसेन के वंशजों की इस्तमदारी अजमेर मेरवाड़ा में रही। भिनाय, बांदनवाड़ा, टांटोती, देवलिया कला, करौट आदि इनके ठिकाने हैं। राव मालदेव के पांचवे पुत्र राजा उदयसिंह ई.सं. 1583 में गद्दी पर बैठे। भारी भरकम शरीर के कारण अकबर के दरबार में शाही लोग उन्हें 'मोटा राजा' संबोधित करते थे। मोटा राजा उदयसिंह के पुत्रों के पास अजमेर में किशनगढ़, खरवा, पीसांगन, जूनिया आदि तथा मालवा में रतलाम, सीतामऊ, सैलाना तथा मारवाड़ में दुगोली, लोटाती आदि रियासतें एवं जागीरी रही। इनके समय दिल्ली पर बादशाह अकबर, आमेर पर भगवानदास तथा राजा मानसिंह, जैसलमेर पर रावल हरराज व भीमसिंह, सिरोही पर राव सुरताण, बीकानेर पर राजा रायसिंह, बून्दी पर राव सुरजन व भोज राज्य करते थे। **(शेष पृष्ठ 6 पर)**

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

अलख नयन
आई हॉस्पिटल
Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

(पृष्ठ एक का शेष)

**उग्रता...** माता को समझाने एवं एक वर्ष इंतजार करने का आग्रह करने के बावजूद वे नहीं मानी और मजबूरन अपनी उग्र तपस्या के दौरान वेदव्यास जी द्वारा किए गए नियोग का परिणाम कुरु वंश में विकृत संताने पैदा हुई। इस प्रकार उग्रता में किए गए कार्यों का परिणाम कल्याणकारी नहीं होता इसीलिए हम आज के दिन भगवान से प्रकृति माता के माध्यम से शीतलता देने की प्रार्थना करते है और इसीलिए शीतला सप्तमी या अष्टमी का पर्व मनाया जाता है।

(पृष्ठ पांच से लगातार)

**मारवाड़ के...** मेवाड़ पर महाराणा उदयसिंह एवं महाराणा प्रताप राज्यारूढ थे। मोटा राजा के बाद जहांगीर एवं शाहजहां के शासन काल में राजा शूरसिंह (सूरसागर बनाने वाले) व राजा गजसिंह का शासन रहा। औरंगजैब के समय राजा जसवंतसिंह का शासन रहा। औरंगजैब से इनके पुत्र अजीतसिंह को बचाकर वीर दुर्गादास राठौड़ ने स्वामी भक्ति की मिशाल कायम की। पंजाब के सिक्खो के दसवें गुरू गोविन्द सिंह व दक्षिण में शिवाजी महाराज मराठा जसवंतसिंह के समकालीन थे। ई. 1803 में राजा जसवन्त सिंह प्रथम की सातवी पीढी में महाराजा मानसिंह मारवाड़ की गद्दी पर बैठे। इससे पहले इनके दादा राजा विजयसिंह ने इन्हें जालोर सूबे की जागीर दे रखी थी। ये नाथ सम्प्रदाय के प्रभाव में अधिक रहे। जालोर का सिरे मंदिर, जोधपुर के उदयमंदिर व महामंदिर, पुष्कर सरोवर का जोधपुर घाट नाथों को समर्पित कर दिए। पोकरण ठाकुर सवाईसिंह चाम्पावत से इनके गद्दी संभालने के बाद से ही बड़ी अदावत रही। मुगलिया सल्तनत का अन्तिम मुस्लिम शासक बाहादुर शाह जफर इनके समय दिल्ली पर काबिज था। महाराजा मानसिंह ने ई.स. जनवरी 1818 में गवर्नर जनरल वाटेन हेस्टिंग्ज के समय ईस्ट इण्डिया कं. से मारवाड़ राज्य की बड़ी संधि कर ली। हालांकि इससे पहले भी वे एक संधि 1803 में भी अंग्रेजों से कर चुके थे। इस समय भीमसिंह, जवानसिंह, सरदारसिंह मेवाड़ के महाराणा, मूलराज (द्वितीय) व गजसिंह जैसलमेर के महारावल, सूरतसिंह व रतनसिंह बीकानेर के महाराजा कल्याणसिंह, मोहकम सिंह, पृथ्वीसिंह किशनगढ़ के महाराजा सवाई प्रतापसिंह जगतसिंह जयपुर के महाराजा थे।

महाराजा मानसिंह के निसंतान होने पर मारवाड़ के वंशज अहमदनगर ईडर (गुजरात) के शासक तखतसिंह जोधपुर की गद्दी पर 1843 में बैठे। इन्होंने अंग्रेजों से प्रगाढ संबंध बनाए तथा माउंट आबू में ग्रीष्मकालीन प्रवास के लिए महलात बनवाने शुरू किए। पासवानों के पुत्रों को राव राज का सम्बोधन दिया। 1857 का प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम इनके समय ये मारवाड़ के शासक थे। इन्होंने बम्बई, बड़ौदा सेन्ट्रल इण्डिया (बी.बी.सी.टी.) रेल की लाइन के लिए मारवाड़ की जमीन दी जिसकी याद में खारची (पाली) का रेल्वे स्टेशन मारवाड़ जंक्शन कहलाता था। बारोठिये शेखावत डूंगजी एवं जवाहर जी इनके समय में थे। ईडर (गुजरात) के महाराजा तथा मारवाड़ सहित पूरे राजपूताना में धाक रखने वाले सर प्रताप आपके तृतीय पुत्र थे। तखतसिंह के बाद 1873 में उनके बड़े पुत्र महाराज जसवन्त सिंह (द्वितीय) जोधपुर की गद्दी पर बैठे। आपने देवलों के लोहियाण की जगह जसवन्तपुरा का किला बनवाया। जोधपुर का जुबली कोर्ट (कचहरी) बनवाया। अजमेर के मैयो कॉलेज के अन्दर मारवाड़ के राजकुमारों व सरदारों के अंग्रेजी माध्यम से पढ़ने के लिए जोधपुर हाउस के नाम से बोर्डिंग भवन बनवाया (1874-75) तथा मैयो भवन के लिए मकराना का संगमरमर मुफ्त भेंट किया। 1875 में भारत की तात्कालीन राजधानी कलकत्ता जाकर भारत के गवर्नर जनरल लार्ड नार्थब्रुक के निमंत्रण पर प्रिंस ऑफ वेल्स (बाद में बादशाह ऐडवर्ड सप्तम) का स्वागत किया। यह मारवाड़ के महाराजा के मुगलों के बाद अंग्रेजों के होने वाले बादशाह से प्रथम मुलाकात थी। आपने जसवंत कॉलेज (वर्तमान वि.वि. का पुराना परिसर) बनवाया। आपके समय ही जोधपुर से मारवाड़ जंक्शन रेल लाइन से जुड़ा जिसका सारा खर्च रियासत ने दिया। आपके समय आर्य समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती जोधपुर आए। आपने लाहौर के डी.ए.वी. (दयानन्द कॉलेज) कॉलेज के लिए दान दिया। महाराजा जसवन्तसिंह की इच्छा अनुसार उनका दाह संस्कार मेहरानगढ़ के सामने किया गया। जहां संगमरमर का उनका स्मारक जसवन्त थड़ा बना हुआ है। इससे पहले जोधपुर के शासकों का दाह संस्कार मण्डोर में किया जाता था।

आपके पुत्र सरदारसिंह का 1895 में राजतिलक हुआ। आपने 1900 में जोधपुर से कराची जाने के लिए बाड़मेर सादीपली रेलवे लाइन बनवाई। आपने कलकत्ता में महारानी विक्टोरिया के मेमोरियल के लिए धन व मकराना का मार्बल भेंट किया। अपने पिता सरदारसिंह के देहावसान के बाद सुमेरसिंह 1911 में जोधपुर राजगद्दी पर बैठे। ये अपने पितामह (दादा) सरप्रताप के साथ प्रथम विश्व युद्ध के मोर्चे पर भी गए। आपने मदनमोहन मालवीय के द्वारा स्थापित बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय में दान दिया तथा उसके भवन की नींव के समय सरप्रताप के साथ उपस्थित हुए। सुमेरसिंह के पुत्र न होने के कारण उनकी मृत्यु पर 1918 ई. में उनके भाई उम्मेदसिंह जोधपुर की राज गद्दी पर बैठे। वे मारवाड़ के सर्व लोकप्रिय महाराजा थे। आपने अनेक प्रजा हितैषी कार्य किए। चौपासनी राजपूत स्कूल, अस्पताल, उम्मेद भवन और जवाई बांध आप के समय की देन है। आपके पुत्र महाराजा हनुवन्तसिंह के समय देश आजाद हो गया। वे 1952 के प्रथम आम चुनाव में जोधपुर से सांसद व विधायक चुने गए परन्तु परिणाम आने के एक दिन पूर्व ही आप का एक विमान दुर्घटना में निधन हो गया। आपकी पार्टी ने मारवाड़ की 33 विधानसभा सीटों में से 30 पर विजयी हासिल की। आपकी धर्मपत्नी राजमाता कृष्णकुमारी जोधपुर से 1971 में लोकसभा के लिए निर्दलीय सांसद चुनी गई। महाराजा हणवंतसिंह के पुत्र महाराजा गजसिंह राज्यसभा के सांसद रहे। आप वेस्ट इण्डिया के ट्रिनिडाट एण्ड टोबेगो में भरत के उच्चायुक्त रहे तथा राजस्थान पर्यटन विभाग के चैयरमेन भी रहे। आपकी बहन चन्द्रेश कुमारी कटोच भी जोधपुर से सांसद तथा केन्द्र सरकार में केबिनेट मंत्री रही हैं।

(पृष्ठ चार का शेष)

**'कृतज्ञता और समाज व्यवस्था'...** हमें दो तरफा प्रयास करना पड़ेगा। बदला लेने को आतुर प्रतिक्रिया वादियों से बचना भी है, अपनी रक्षा भी करनी है और सौहार्द का प्रयास भी जारी रखना है। उनके उस विद्रोह के भाव का दुरुपयोग कर अपनी रोटियां सेकने वालों से उनको भी बचाना है और स्वयं भी बचना है। उनकी मनोदशा को समझना भी है और स्वयं को समझाना भी है। वास्तव में यह हमारे धैर्य की परीक्षा है और यह हमारे महान भारतीय समाज एवं उसकी उत्कृष्ट परम्पराओं के लिए आवश्यक भी है। इसलिए आएं कृतज्ञता का अनुभव करें, इंसानियत की उत्कृष्टता की ओर कदम बढ़ाए और भारतीयता को बचाने में अपना योगदान देवें।

जीवनपयोगी... (पृष्ठ दो का शेष)

- सांख्यिकी (Statistics)
- सामान्य अध्ययन - वित्त एवं अर्थशास्त्र (Genral Studies - Finance and Economics)

प्रत्येक प्रश्नपत्र की अवधि 2 घंटे की होगी। प्रत्येक प्रश्नपत्र के पूर्णांक 200 होंगे। अंग्रेजी के प्रश्नपत्र में 200 प्रश्न तथा अन्य तीनों प्रश्नपत्रों में 100-100 प्रश्न पूछे जाएंगे। यह परीक्षा भी ऑनलाइन अर्थात कंप्यूटर आधारित होती है।

**(c) तृतीय स्तर (Tier - III):-** यह परीक्षा पेन-पेपर आधारित होगी। इसका माध्यम अंग्रेजी अथवा हिंदी होगा तथा इसमें निबंध, संक्षिप्तिकरण, पत्रलेखन आदि का परीक्षण होगा। परीक्षा के पूर्णांक 100 होंगे तथा अवधि एक घंटे की होगी।

**(d) चतुर्थ स्तर (Tier- IV):-** इसके अंतर्गत कंप्यूटर दक्षता परीक्षण/कौशल परीक्षण/डॉक्युमेंट्स वेरिफिकेशन किया जाता है।

**(2.) सी एच एस एल (CHSL) परीक्षा :** इसका पूरा नाम Combined Higher Secondary Level Exam है। इसके लिए न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता बारहवीं परीक्षा उत्तीर्ण होना है। यह परीक्षा प्रतिवर्ष आयोजित होती है तथा इसके तीन स्तर होते हैं-

**(a) प्रथम स्तर (Tier-I) :-** CGL की भांति इसमें भी एक ही प्रश्नपत्र होता है जिसमें चार विषयों - सामान्य बुद्धिमत्ता व तर्कशक्ति (General Intelligence), सामान्य जागरूकता (General Awareness), गणितीय अभिरुचि (Quantitative Aptitude) तथा अंग्रेजी (English Comprehension) से प्रश्न पूछे जाते हैं। उपरोक्त चारों विषयों से 25-25 प्रश्न पूछे जाते हैं। प्रश्नपत्र 200 अंको का होता है तथा इसकी अवधि एक घंटे की होती है। यह परीक्षा ऑनलाइन अर्थात कंप्यूटर आधारित होती है। सभी प्रश्न बहुवैकल्पिक प्रकार के होंगे तथा प्रत्येक गलत उत्तर के लिए .50 अंको का नकारात्मक अंकन होगा।

**(b) द्वितीय स्तर (Tier - II):-** यह परीक्षा पेन-पेपर आधारित होगी। इसमें विवरणात्मक अर्थात विषयनिष्ठ प्रकार के प्रश्न पूछे जाएंगे। इसका माध्यम अंग्रेजी अथवा हिंदी होगा तथा इसमें निबंध, संक्षिप्तिकरण, पत्रलेखन आदि का परीक्षण होगा।

**(c) तृतीय स्तर (Tier- III):-** इसके अंतर्गत टंकण परीक्षण/कौशल परीक्षण किया जाता है।

SSC द्वारा आयोजित की जाने वाली परीक्षाओं की विस्तृत जानकारी sss.nic.in पर जाकर प्राप्त की जा सकती है। **(क्रमशः)**

## हाथीसिंह बस्तवा को पितृ शोक

राजूसिंह

जोधपुर के बस्तवा निवासी स्वयंसेवक हाथीसिंह के पिताजी **राजूसिंह** जी का 15 मार्च को देहावसान हो गया है। परमेश्वर दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देवें एवं परिवार को संबल प्रदान करें।

## शक्तिसिंह कोटड़ानायाणी को पत्नी शोक

श्रीमती सुमित्रा बा

गुजरात के कोटड़ा नायाणी निवासी स्वयंसेवक शक्तिसिंह की पत्नी **श्रीमती सुमित्रा बा** का 12 मार्च को सड़क दुर्घटना में देहावसान हो गया। 11 मार्च को ही उनकी पुत्री एवं पुत्र का विवाह था। परमेश्वर शोक संतप्त परिवार को यह आघात सहन करने की शक्ति प्रदान करें एवं दिवगंत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देवें।

## प्रवीण सिंह बावलियारी 15 मार्च को देहावसान

प्रवीणसिंह बावलियारी

गुजरात से संघ के स्वयंसेवक **प्रवीणसिंह बावलियारी** का 15 मार्च को देहावसान हो गया। 3 अगस्त 1962 को जन्में प्रवीणसिंह जी ने अपने जीवन में 32 शिविर किए एवं गुजरात में संघ के प्रारंभिक दिनों में अच्छे सहयोगी रहे। परमेश्वर से प्रार्थना है कि वे दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देवें।

# ..नमस्ते भवानी

**महाकवि चंदवरदाई पृथ्वीराज रासो के रचयिता और पृथ्वीराज चौहान के राजकवि थे। उनके द्वारा रचित श्री ज्वालामुखी स्तुति प्रस्तुत है :**

## दोहा

चिंता विघन विनाषनी, कमलासनी शकत्त
वीसहथी हंस वाहनी, माता देहु सुमत्त।

**छन्द भुजंगप्रयात**

नमो आदि अन्नादि तूंही भवानी
तुंही जोगमाया तूंही बाक बानी
तुंही धरणी आकाष विभो पसारे
तुंही मोह माया बिखे शूल धारे ।1।

तुंही चार वेदं खटं भाष चिन्ही
तुंही ज्ञान विज्ञान मे सर्व भीनी
तुंही वेद विद्या चऊदे प्रकाषी
कला मंड चोवीस की रूप राषी।2।

तुंही रागनी राग वेदं पुराणम
तुंही जन्त्र मे मन्त्र में सर्व जाणम
तुंही चन्द्र मे सूर्य मे एक भासै
तुंही तेज में पुंज मे श्री प्रकाशै ।3।

तुंही सोखनी पोखनी तीन लोकं
तुंही जागनी सोवनी दूर दोखं
तुंही धर्मनी कर्मनी जोगमाया
तुंही खेचरी भूचरी वज्रकाया ।4।

तुंही रिद्धि की सिद्धि की एक दाता
तुंही जोगिनी भोगिनी हो विधाता
तुंही चार खानी तुंही चार वाणी
तुंही आतमा पंच भूतं प्रमाणी ।5।

तुंही सात द्वीपं नवे खंड मंडी
तुंही घाट ओघाट ब्रह्मंड डंडी
तुंही धरणी आकाष तूं बेद बानी
तुंही नित्य नौजोवना हो भवानी ।6।

तुंही उद्र में लोक तीनूं उपावे
तुंही छन्न में खान पानं खपावे
तुंही अेक अन्नेक माया उपावे
तुंही ब्रह्म भुतेष विष्णु कहावे ।7।

तुंही मात हो एक ज्योती स्वरूपं
तुंही काल महाकाल माया विरूपं
तुंही हो ररंकार ओंकार बाणी
तुंही स्थवरं जंगमं पोख प्राणी ।8।

तुंही तूं तुंही तूं तुंही एक चण्डी
हरी ष्षंकरी ब्रह्म भासे अखण्डी
तुंही कच्छ रूपं उदद्धी बिलोही
तुंही मोहिनी देव दैतां विमोही।9।

तुंही देह वाराह देवी उपाई
तुंही ले धरा थंभ दाढां उठाई
तुंही विप्रहू में सुरापान टार्यो
तुंही काल बाजी रची दैत मार्यो।10।

तुंही भारजा इंद्र को मान मार्यो
तुंही जाय के भ्रग्गु को गर्व गार्यो
तुंही काम कल्ला विखे प्रेम भीनी
तुंही देव-दैतां दमी जीत दीनी ।11।

तुंही जागती जोति निंद्रा न लेवे
तुंही जीत देनी सदा देव सेवे
अजोनी न जोनी उसासी न सासी
न बैठी न ऊभी न पोढ़ी प्रकासी ।12।

न जागे न सोवे न हाले न डोले
गुपन्ति न छत्ति करंति किलोले
भुजालं विषालं उजालं भवानी
कृपालं त्रिकालं करालं दिवानी ।13।

उदानं अपानं अछेही न छेही
न माता न ताता न भ्राता सनेही
विदेही न देही न रूपा न रेखी
न माया न काया न छाया विषेखी ।14।

उदासी न आसी निवासी न मंडी
सरूपा विरूपा न रूपा सुचंडी
कमखा न संखा असंखा कहानी
हरींकार शब्दं निरंकार बानी ।15।

नवोढा न प्रौढा न मुग्धा न बाली
करोधा विरोधा निरोधा कृपाली
अभंगा न अंगा त्रिभंगा न जानी
अनंगा न अंगा सुरंगा पिछानी ।16।

शिखर पै फुहारो असो रूप तोरो
अजोनी सुपावों कटे फंद मोरो
पढ़े चंद छन्दं अभै दान पाऊं
निषां वासरं मात दुर्गे सुध्याऊं ।17।

सुनी साधकी टेर धाओ भवानी
गजं डूबते वार ब्रजराज जानी
भजे खेचरी भूचरी भूत प्रेतं
भजे डाकनी शाकनी छोड़ खेतं ।18।

पढे.जीत देनी सबै दैत नाषं
भजे किंकरी ष्षंकरी काल पाषं
भजे तोतला जंत्र मंत्रं बिरोले
भजे नारसिंगी बली बीर डोले ।19।

निशा वासरं शक्ति को ध्यान धारे
सु नैनं करी नित्य दोषं निवारे
करी वीनती प्रेमसो भाट चंदं
पढ़ंते सुनंते मिटे काल फंदं ।20।

तुंही आदि अन्नदि की एक माया
सबे पिण्ड ब्रह्मांड तुंही उपाया
तुंही बीर बावन्न वंदे सुभारी
तुंही वाहनी हंस देवी हमारी ।21।

तुंही पंच तत्वं धरी देह तारी
तुंही गेह गेहं भई शील वारी
तुंही ष्षैलजा श्री सावित्री सरूपी
तुंही षिव विष्णू अजं थीर थप्पी ।22।

तुंही पान कुंभं मधुपान करनी
तुंही दुष्ट घातीन के प्रान हरनी
तुंही जीव तूं षिव तूं रीत भरनी
तुंही अंतरीखं तुंही चीर धरनी।23।

तुंही वेद में जीव रूपं कहावे
निराधर आधार संसार गावे
तुंही त्रीगुनी तेज माया लुभानी
तुंही पंच भूतं नमस्ते भवानी ।24।

नमोड़कार रूपे कल्यानी कमल्ला
कलारूपं तूं कामदा तूं विमल्ला
कुमारी करूणा कमंख्या कराली
जया विजया भद्रकाली किंकाली ।25।

शिवा शंकरी विष्व विमोहनीयं
वराही चामुण्डा द्रुगा जोगनीयं
महालच्छमी मंगला रत्त अख्खी
महा तेज अंबार जालंद्र मख्खी ।26।

तुंही गंग गोदावरी गोमतीयं
तुंही नर्मदा जम्मना सर्सतीयं
तुंही कोटि सूरज्ज तेजं प्रकाषी
तुंही कोटि चंदाननं जोत भासी ।27।

तुंही काटिधा विष्व आकाष धारे
तुंही कोटि सुमेरू छाया अपारे
तुंही कोटि दावानलं ज्वालमाला
तुंही कोटि भयभीत रूपं कराला ।28।

तुंही कोटि श्रृंगार लावण्यकारी
तुंही राधिका रूप रीझे मुरारी
तुंही विष्व कर्ता तुंही विष्व हर्ता
तुंही स्थावंर जंगमं में प्रवर्ता ।29।

द्रुगामां दरीजन्न वंदे न आयं
जपे जाप जालंदरी तो सहायं
नमस्ते नमस्ते सु जालेन्द्र रानी
सुरं आसुरं नाग पूजंत प्रानी ।30।

नमोअंकार रूपे सु आपे बिराजे
क्लींअंकार ह्रींकार ओंकार छाजे
ओहंकार देवी सोहंकार भासं
श्रियंकार हूंकार त्रींकार वासं ।31।

तुंही पातकी नाषनी नारसींगी
तुंही जोगमाया अनेका सुरंगी
तुंही तूं ज जाने सु तोरो चरीतं
कहां में लखों चंद तोरी सुक्रीतं ।32।

अपारं अनंतं जुगं रूप जानी
नमस्ते नमस्ते नमस्ते भवानी
नमो ज्वाला ज्वालामुखी तोहि ध्यावे
अबे सिघ्र वरदान को चंद पावे ।33।

कहांलो बखानूं लघू बुद्धी मेरी
पतंगी कहा सूर साम्हे उजेरी
रती है तुम्हारी मती है तुम्हारी
चिती है तुम्हारी गती है तुम्हारी ।34।

जुगं हाथ जोरी कहे चंद छंदं
हरो भक्त के दुःख आनंदकंदं
हिये में बिरजो करो आप बानी
नमस्ते नमस्ते नमस्ते भवानी ।35।

## दोहा

करि विनती यूं बंदिजन, सनमुख रही सुजान
प्रकट अम्बिका यूं कह्यो, मांग चंद वरदान ।

**- साभार सोशल मीडिया**

# वीरात्रा माता मंदिर में तहसील स्तरीय बैठक संपन्न

बाड़मेर जिले की चौहटन तहसील की श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउंडेशन की तहसील स्तरीय बैठक 15 मार्च को चौहटन के निकट स्थित वीरात्रा माता मंदिर में सम्पन्न हुई। बैठक में चौहटन तहसील के विभिन्न गांवों से समाज के सैंकड़ों युवा साथी शामिल हुए जिनमें नौकरीपेशा, व्यवसायी, राजनीतिज्ञ, विद्यार्थी आदि सभी वर्गों के लोग शामिल थे। बैठक में बताया गया कि श्री क्षत्रिय युवक संघ समाज के लोगों को अपने लक्ष्य के अनुकूल बनाने एवं समाज में संघ कार्य के विस्तार के अनुकूल परिस्थितियां बनाने के लिए समय-समय पर विभिन्न प्रयोग करता रहता

है। वैसा ही एक प्रयोग श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउंडेशन है जिसके तहत समाज की युवा शक्ति को भारत की वर्तमान व्यवस्था के प्रति सकारात्मक बनाकर उनके सामाजिक भाव की शक्ति को संघ के निर्देशन में समाज के लिए अधिकतम उपयोगी बनाने का प्रयास किया जा रहा है। साथ ही ऐसी युवा शक्ति की विभिन्न समस्याओं को समझ कर उन्हें उन समस्याओं के हल के लिए व्यवस्थागत तरीकों का शिक्षण दिया जा रहा है। ऐसे युवाओं को संघ की विचारधारा से भी परिचित करवाया जा रहा है ताकि वे अपने जीवन लक्ष्य की ओर संघ के निर्देशन में उन्मुख हो सकें। बैठक का संचालन करते हुए बाड़मेर टीम के सदस्य महेन्द्रसिंह तारातरा ने फाउंडेशन का परिचय देते हुए बताया कि विगत 12 जनवरी को माननीय संघ प्रमुख श्री के निर्देशन में संघ के अनुषांगिक संगठन के रूप में श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउंडेशन की स्थापना की गई एवं तब से यह स्वयं के लिए निर्धारित बिन्दुओं पर क्रियाशील है। केन्द्रीय टीम के सदस्य आजाद सिंह शिवकर ने फाउंडेशन का संगठनात्मक स्वरूप बताते हुए कहा कि इसको संघ प्रमुख श्री द्वारा नियुक्त एक केन्द्रीय टीम संचालित करती है एवं वह अपने सहयोग के लिए 10-10 लोगों की जिला स्तर पर टीम बनाती है। अभी तक मारवाड़ एवं शेखावटी के जिलों के अतिरिक्त भीलवाड़ा में काम प्रारम्भ हुआ है। बैठक की व्यवस्था का जिम्मा बाड़मेर टीम के सदस्य नरपतसिंह दूधवा के संयोजन में चौहटन के साथियों ने निभाया।

## कुछ उपयोगी जानकारियां

- वैदिक संस्कृति की मान्यताओं के अनुसार सृष्टि का प्रारंभ शब्द से हुआ। मूल स्वर छह होते हैं। अ, आ, इ, ई, उ, ऊ। शेष सभी स्वर इन्हीं से बनते हैं। व्यंजन इन्हीं स्वरों का स्थूलीकरण है। ओंकार से सभी मात्राएं निकलती हैं। अक्षरों से शब्द बनते है। शब्दों से पद बनते हैं। पदों में अर्थ मिलने से पदार्थ बना और पदार्थों से सृष्टि बनी है।
- आज वेदों के 1 लाख मंत्र उपलब्ध हैं जिनमें से 80,000 कर्मकांड के, 16000 उपासना कांड के एवं 4000 ज्ञान कांड के हैं।
- मनुस्मृति में धर्म के 10 लक्षण बताए गए हैं - धैर्य, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रियनिग्रह, धी, विद्या, सत्य और अक्रोध।

### वैदिक समय गणना

**एक कल्प :** ब्रह्मा जी का एक दिन 4 अरब 32 करोड़ वर्ष
**एक कल्प :** 14 मनवंतर व 15 संधियां
**एक संधि :** 1728000 वर्ष (एक सतयुग के बराबर)
**एक मनवंतर :** 30 करोड़ 67 लाख 20 हजार वर्ष
**एक मनवंतर :** आकाश गंगा के केन्द्र के चारों ओर सौर मंडल द्वारा किए परिक्रमण का समय।
**एक मनवंतर :** 71 चतुर्युग।
**एक चतुर्युग :** 43 लाख 20 हजार वर्ष (सतयुग, त्रेता युग, द्वापर युग व कलियुग)
**कलयुग :** 4 लाख 32 हजार वर्ष।
**द्वापर युग :** 8 लाख 64 हजार वर्ष (कलयुग का दुगुना)
**त्रेता युग :** 12 लाख 96 हजार वर्ष (कलयुग का त्रिगुना)
**सतयुग :** 17 लाख 28 हजार वर्ष (कलयुग का चौगुना)।
**(अभी 7वें मनवंतर की 28वीं चतुर्युगी का कलयुग चल रहा है।)**

- **33 कोटि देवता :** 11 प्रकार के रूद्र, 8 प्रकार के वसु, 12 प्रकार के आदित्य, इन्द्र व प्रजापति।
- **पांच ऋण :** देव ऋण, ऋषि ऋण, पितृ ऋण, मनुष्य ऋण व भूत ऋण।
- **पांच यज्ञ :** देवयज्ञ, ऋषियज्ञ, पितृयज्ञ, मनुष्य यज्ञ, भूत यज्ञ।
- **तीन शरीर :** स्थूल शरीर, सूक्ष्म शरीर व कारण शरीर।
- **पांच देव :** गणेश, शिव, देवी, विष्णु और सूर्य।
- **दस अवतार :** कूर्म, वराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध और कल्कि।
- **चार कुमार :** सनक, सनत्, सनन्दन, सनत्कुमार।
- **अष्टमूर्ति :** पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, सूर्य, चन्द्र व आत्मा।

**शिव पूजा में अष्ट पुष्पों द्वारा शिव अर्चना:**

ॐ शर्वाय क्षितिमूर्तये नमः, ॐ भवाय जलमूर्तये नमः, ॐ रूद्राय अग्नि मूर्तये नमः, ॐ उग्राय वायुमूर्तय नमः, ॐ भीमाय आकाशमूर्तये नमः, ॐ ईशानाय सूर्यमूर्तये नमः, ॐ महादेवाय सोममूर्तये नमः, ॐ पशुपतये यजमानमूर्तये नमः,

**(स्वामी संवित सोमगिरि जी की पुस्तक 'कालजयी सनातन धर्म' के अनुसार)।**

## राव खींवकरण की अश्वारूढ मूर्ति का अनावरण

पाली जिले में गिरी सुमेल रणस्थली पर गिरी सुमेल युद्ध के नायकों में से एक राव खींवकरण जी उदावत की अश्वारूढ मूर्ति का 13 मार्च को अनावरण किया गया। इस अवसर पर निकट के गांवों से राठौड़ों की उदावत शाखा के समाज बंधुओं के साथ-साथ अन्य ग्रामीण भी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। 13 को प्रातः हवन पूजन के बाद विधिवत मूर्ति का अनावरण हुआ एवं प्रसाद का वितरण किया गया। वक्ताओं ने राव खींवकरण जी के जीवन से प्रेरणा लेने का आह्वान किया। 12 मार्च की शाम भजन संध्या का आयोजन किया गया।

### मानवजीत सिंह उदावत अध्यक्ष निर्वाचित

पाली जिले के जैतारण स्थित गोपाल द्वारा में उदावत महासभा के चुनाव संपन्न हुए जिनमें मानवजीत सिंह उदावत (रायपुर) को निर्विरोध अध्यक्ष निर्वाचित किया गया। इस अवसर पर निकट के गांवों के उदावत समाजबंधु उपस्थित रहे।

## बूंदी के पूर्व नरेश की 100वीं जयंती मनाई

बूंदी रियासत के पूर्व नरेश कर्नल बहादुर सिंह हाड़ा की 100वीं जयंती 16 मार्च को बूंदी की क्षत्रिय शिक्षा प्रचारिणी समिति के तत्वावधान में मनाई गई। इस अवसर पर बहादुरसिंह सर्किल पर स्थित प्रतिमा पर माल्यार्पण कर समारोह की शुरुआत की गई। उसके बाद सर्किल से प्रारंभ होकर शहर में वाहन रैली निकाली गई। रैली के पश्चात बालिका छात्रावास प्रांगण में जयंती समारोह का आयोजन किया गया जिसमें बोर्ड परीक्षाओं में 90 प्रतिशत से अधिक अंक लाने वाले विद्यार्थियों, खेल प्रतिभाओं, नव निर्वाचित सरपंचों, उप सरपंचों एवं अन्य क्षेत्रों की विशिष्ट प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर पूर्व सांसद इज्यराजसिंह, महिपालसिंह हाड़ा, बलराज खींची, हरीराज सिंह, भरतसिंह, मधुकंवर, रोहिणी हाड़ा आदि अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

### एयर वाइस मार्शल चंदन सिंह नहीं रहे

1971 के युद्ध में ढाका पोस्ट पर अदम्य साहस दिखाने वाले महावीर एयर वाइस मार्शल चंदन सिंह का 29 मार्च को देहावसान हो गया। 1965 में वीर चक्र एवं 1971 में महावीर चक्र से सम्मानित चंदन सिंह पाली जिले के बागावास के मूल निवासी थे एवं वर्तमान में जोधपुर में निवास रत थे।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org